VAJIRAO & REDDY INSTITUTE
India's Top Potential Training Institute for IAS

+918988885050
+918988886060

www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

TODAY'S ANALYSIS

(आज का विश्लेषण)

(09 November 2024)

Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

Important News:

- 'बर्लिन की दीवार' के निर्माण एवं पतन का विश्व इतिहास पर प्रभाव
- सौर ऊर्जा का नया युग: अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) द्वारा संचालित प्रगति
- MCQ

ADDRESS:
19/1A Shakti Nagar, Nagiya Park Near Delhi University, New Delhi - 110007 (India)

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

'बर्लिन की दीवार' के निर्माण एवं पतन का विश्व इतिहास पर प्रभाव:

परिचय:

- 9 नवंबर, 1989 की शाम को पूर्वी बर्लिन में क्रांति का एक अप्रत्याशित दृश्य था। जैसे ही यात्रा प्रतिबंधों में ढील की खबर फैली, हजारों लोग बर्लिन की दीवार पर इकट्ठा हो गए, एक ऐसी भयावह संरचना जिसने लगभग तीन दशकों तक पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी को अलग रखा था।
- एक साधारण सी दिखने वाली प्रेस कॉन्फ्रेंस और एक गड़बड़ घोषणा ने एक लगभग अवास्तविक क्षण को जन्म दिया - भ्रमित और अभिभूत सीमा रक्षकों ने द्वार खोल दिए। कुछ ही मिनटों में, पूर्वी और पश्चिमी बर्लिन के लोगों की भीड़ हंसी, आंसू और जश्न मनाते हुए एक-दूसरे से मिलने लगी और हथौड़ों ने कंक्रीट की उस दीवार को तोड़ दिया जिसने 28 सालों तक शहर को विभाजित किया हुआ था। यह रात, जो अब 35 साल पहले की है, इतिहास में विभाजन पर एकता की महान विजय के रूप में याद की जाती है।

दीवार से पहले ही बर्लिन एक विभाजित शहर था:

- द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में, जर्मनी को संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और सोवियत संघ के नियंत्रण में कब्जे के चार क्षेत्रों में विभाजित किया गया था।
- बर्लिन, हालांकि सोवियत क्षेत्र के भीतर स्थित था, लेकिन इसे भी चार शक्तियों के बीच विभाजित किया गया था। अमेरिकी, ब्रिटिश और फ्रांसीसी क्षेत्र ने पश्चिमी बर्लिन का निर्माण किया और सोवियत क्षेत्र पूर्वी बर्लिन बन गया। जर्मनी के विभाजन और उसके कब्जे की प्रकृति की पुष्टि 17 जुलाई और 2 अगस्त 1945 के बीच आयोजित पॉट्सडैम सम्मेलन में मित्र देशों के नेताओं द्वारा की गई थी।

बर्लिन की दीवार: शीत युद्ध के वैचारिक विभाजन की प्रतिनिधि

- पूर्व युद्धकालीन मित्र राष्ट्रों के बीच संबंध, हालांकि 1942 की शुरुआत से ही तनावपूर्ण थे, लेकिन युद्ध के बाद के यूरोप के स्वरूप पर सहमति बनाने के लिए संघर्ष करने के कारण और भी तनावपूर्ण हो गए।
- 1945 तक, संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ वैचारिक रूप से विरोधी 'महाशक्तियों' के रूप में उभरने लगे थे, जिनमें से प्रत्येक युद्ध के बाद की दुनिया में अपना प्रभाव डालना चाहता था।

- जर्मनी शीत युद्ध की राजनीति का केंद्र बन गया और जैसे-जैसे पूर्व और पश्चिम के बीच विभाजन अधिक स्पष्ट होते गए, वैसे-वैसे जर्मनी का विभाजन भी होता गया।
- 1949 में, जर्मनी औपचारिक रूप से दो स्वतंत्र राष्ट्रों में विभाजित हो गया: जर्मनी का संघीय गणराज्य (FDR या पश्चिम जर्मनी), जो पश्चिमी लोकतंत्रों से संबद्ध था, और जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य (GDR या पूर्वी जर्मनी), जो सोवियत संघ से संबद्ध था।
- 1952 में, पूर्वी जर्मन सरकार ने पश्चिम जर्मनी के साथ सीमा बंद कर दी, लेकिन पूर्व और पश्चिम बर्लिन के बीच की सीमा खुली रही। पूर्वी जर्मन अभी भी शहर के माध्यम से कम दमनकारी और अधिक समृद्ध पश्चिम में भाग सकते थे।

बर्लिन की दीवार का समय के साथ विकास हुआ:

- 1961 में, अफ़वाहें फैलीं कि सीमा को मज़बूत करने और पूर्वी जर्मनों को पश्चिम की ओर जाने से रोकने के लिए उपाय किए जाएँगे। 15 जून को, पूर्वी जर्मन नेता वाल्टर उलब्रिच ने घोषणा की कि 'किसी का भी दीवार बनाने का इरादा नहीं है', लेकिन 12-13 अगस्त की रात को पश्चिमी बर्लिन के चारों ओर एक तार अवरोध का निर्माण किया गया।

- पश्चिमी और सोवियत क्षेत्रों के बीच स्थापित क्रॉसिंग पॉइंट बंद कर दिए गए, जिससे पड़ोस विभाजित हो गए और रातों-रात परिवार अलग हो गए। इस कांटेदार तार अवरोध से, दीवार अंततः पश्चिमी बर्लिन को घेरने वाली एक मज़बूत कंक्रीट संरचना में विकसित हो गई और इसे आसपास के पूर्वी जर्मन क्षेत्र से अलग कर दिया।
- बर्लिन की दीवार एक दीवार नहीं, बल्कि दो दीवारें थीं। 155 किलोमीटर लंबी और चार मीटर ऊंची ये दीवारें एक भारी सुरक्षा वाले, खदानों से भरे गलियारे से अलग थीं, जिसे 'डेथ स्ट्रिप' के नाम से जाना जाता था। यह पूर्वी जर्मन सीमा रक्षकों की निरंतर निगरानी में थी, जिन्हें पश्चिम बर्लिन में भागने की कोशिश करने वाले किसी भी व्यक्ति को गोली मारने का अधिकार था।
- 1989 तक, दीवार पर 302 वॉचटावर थे बर्लिन की दीवार के 28 साल के इतिहास में इसे पार करने की कोशिश में 100 से ज़्यादा लोग मारे गए। लेकिन दीवार पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी को अलग करने वाली बड़ी 'आंतरिक जर्मन सीमा' का सिर्फ़ एक हिस्सा थी, और सैकड़ों लोग अन्य किलेबंद सीमा बिंदुओं को पार करने की कोशिश में मारे गए।

बर्लिन दीवार के पतन (9 नवंबर 1989) की घटना:

- उल्लेखनीय है कि पूर्वी बर्लिन में पांच लाख लोगों के सामूहिक विरोध प्रदर्शन के पांच दिन बाद, 9 नवंबर 1989 को, कम्युनिस्ट पूर्वी जर्मनी को पश्चिमी जर्मनी से अलग करने वाली बर्लिन की दीवार ढह गई थी।
- पूर्वी जर्मन नेताओं ने सीमाओं को ढीला करके बढ़ते विरोध को शांत करने की कोशिश की थी, जिससे पूर्वी जर्मनों के लिए यात्रा आसान हो गई थी। उनका इरादा सीमा को पूरी तरह से खोलने का नहीं था।
- लेकिन 9 नवंबर को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में, पूर्वी जर्मन प्रवक्ता गुंटर शाबोव्स्की ने घोषणा की कि पूर्वी जर्मन तुरंत शुरू होने वाले पश्चिमी जर्मनी में यात्रा करने के लिए स्वतंत्र होंगे। उन्होंने यह स्पष्ट नहीं किया कि कुछ नियम लागू रहेंगे। पश्चिमी मीडिया ने गलत तरीके से रिपोर्ट की कि सीमा खुल गई है और दीवार के दोनों ओर चौकियों पर भीड़ जल्दी ही जमा हो गई। आखिरकार पासपोर्ट जांच बंद कर दी गई और लोग बिना किसी प्रतिबंध के सीमा पार करने लगे।
- बर्लिन की दीवार गिरने के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक प्रभाव ने पहले से ही अस्थिर पूर्वी जर्मन सरकार को और कमजोर कर दिया। बर्लिन की दीवार गिरने के 11 महीने बाद 3 अक्टूबर 1990 को जर्मनी फिर से एकजुट हुआ।

बर्लिन की दीवार क्यों गिरी?

- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, यूरोप को सोवियत संघ और उसके पूर्व पश्चिमी सहयोगियों ने अलग कर दिया, और सोवियत संघ ने धीरे-धीरे पूर्व को पश्चिम से अलग करते हुए एक "लोहे का परदा" खड़ा कर दिया।
- 1980 के दशक तक, सोवियत संघ को तीव्र आर्थिक समस्याओं और बड़ी खाद्य कमी का सामना करना पड़ा, और जब अप्रैल 1986 में यूक्रेन के चेर्नोबिल पावर स्टेशन में एक परमाणु रिएक्टर में विस्फोट हुआ, तो यह कम्युनिस्ट ब्लॉक के आसन्न पतन का एक प्रतीकात्मक क्षण था।
- मिखाइल गोर्बाचेव, तुलनात्मक रूप से युवा सोवियत नेता जिन्होंने 1985 में सत्ता संभाली, ने "ग्लासनोस्ट" (खुलेपन) और "पेरेस्त्रोइका" (पुनर्गठन) की सुधार नीति पेश की। लेकिन घटनाएँ उनकी अपेक्षा से कहीं अधिक तेज़ी से घटित हुईं।

यूरोपीय इतिहास में एक नया अध्याय: सोवियत संघ का पतन

- 3 दिसंबर को, सोवियत संघ के राष्ट्रपति श्री गोर्बाचेव और अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज एचडब्ल्यू बुश माल्टा में एक साथ बैठे, और एक बयान जारी किया जिसमें कहा गया कि दोनों शक्तियों के बीच शीत युद्ध समाप्त होने वाला है।

- नवंबर 1989 में चेकोस्लोवाक साम्यवाद को उखाड़ फेंकने के लिए प्राग में इस प्रदर्शन के लिए पाँच लाख से अधिक लोग एकत्र हुए थे।
- 1989 की क्रांतियों की लहर अभी खत्म नहीं हुई थी। प्राग में छात्र प्रदर्शनकारियों ने पुलिस के साथ झड़प की, जिससे मखमली क्रांति शुरू हो गई जिसने कुछ ही हफ्तों में चेकोस्लोवाक साम्यवाद को उखाड़ फेंका।
- रोमानिया में, प्रदर्शन हिंसा में समाप्त हो गए और कम्युनिस्ट तानाशाह निकोले चाउसेस्कु का पतन हुआ। अपदस्थ नेता के अपने महल से भाग जाने और गुस्साई भीड़ के उस पर धावा बोलने के बाद एक नई सरकार ने सत्ता संभाली। उस वर्ष पूर्वी यूरोप में रोमानियाई क्रांति एकमात्र ऐसी क्रांति थी जिसमें रक्तपात हुआ था। उन्हें और उनकी पत्नी एलेना को क्रिसमस के दिन पकड़ लिया गया और मार दिया गया। क्रांति से पहले और बाद में हुई अशांति में 1,000 से अधिक लोग मारे गए, जिससे रोमानिया अन्य स्थानों पर हुई रक्तहीन घटनाओं से अलग हो गया।
- 1990 में, लातविया, लिथुआनिया और एस्टोनिया ने अपनी नई-नई मिली राजनीतिक स्वतंत्रता का लाभ उठाते हुए अपनी साम्यवादी सरकारों को वोट देकर बाहर कर दिया और स्वतंत्रता की ओर कदम बढ़ाए। सोवियत संघ टूट रहा था,

लेकिन श्री गोर्बाचेव ने 15 सोवियत गणराज्यों के नेताओं को एक साथ बुलाकर इसे सुधारने का एक आखिरी दुर्भाग्यपूर्ण प्रयास किया।

- उनके सुधारों का विरोध करने वाले कट्टरपंथी कम्युनिस्टों ने उन्हें पहले ही रोक दिया, अगस्त 1991 में जब वे क्रीमिया में छुट्टियां मना रहे थे, तब उन्होंने तख्तापलट का प्रयास किया और उन्हें घर में नजरबंद कर दिया।
- लोकतंत्र समर्थक ताकतों द्वारा रूसी गणराज्य के राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन के इर्द-गिर्द एकजुट होने के कारण तख्तापलट तीन दिनों में पराजित हो गया।
- लेकिन यह सोवियत संघ के लिए पतन की घंटी थी, और एक-एक करके इसके घटक गणराज्यों ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। वर्ष के अंत तक सोवियत ध्वज अंतिम बार फहराया गया था।

बर्लिन के दिवार के पतन का विश्व इतिहास पर प्रभाव:

- **शीत युद्ध का अंत:** 1989 में बर्लिन की दीवार का गिरना शीत युद्ध की समाप्ति और यूरोप के पूर्व और पश्चिम के बीच विभाजन का प्रतीक था।
- **जर्मनी का पुनः एकीकरण:** बर्लिन की दीवार के गिरने से 1990 में जर्मनी का एकीकरण हुआ।

- **सोवियत संघ का पतन:** बर्लिन की दीवार का गिरना 1991 में सोवियत संघ के पतन के साथ हुआ।
- **लोकतंत्र का विस्तार:** बर्लिन की दीवार के गिरने से मध्य-पूर्वी यूरोप और भूतपूर्व सोवियत संघ के कई देशों में लोकतंत्र का विस्तार हुआ।
- **यूरोपीय एकीकरण:** बर्लिन की दीवार के गिरने से यूरोपीय एकीकरण की प्रक्रिया में तेज़ी आई, जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शुरू हुई थी।
- **नाटो का विस्तार:** बर्लिन की दीवार के गिरने से नाटो का विस्तार पूर्वी जर्मनी और अधिकांश भूतपूर्व वारसॉ संधि देशों में हुआ।
- **शांतिपूर्ण विरोध का महत्व:** बर्लिन की दीवार के गिरने से शांतिपूर्ण विरोध और लोगों की आकांक्षाओं की शक्ति का प्रदर्शन हुआ।
- **जर्मनी में आर्थिक और सामाजिक विभाजन की उपस्थिति:** बर्लिन की दीवार के गिरने से पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के बीच एक सामाजिक और आर्थिक विभाजन पैदा हो गया, जो आज भी बना हुआ है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

सौर ऊर्जा का नया युग: अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) द्वारा संचालित प्रगति

परिचय:

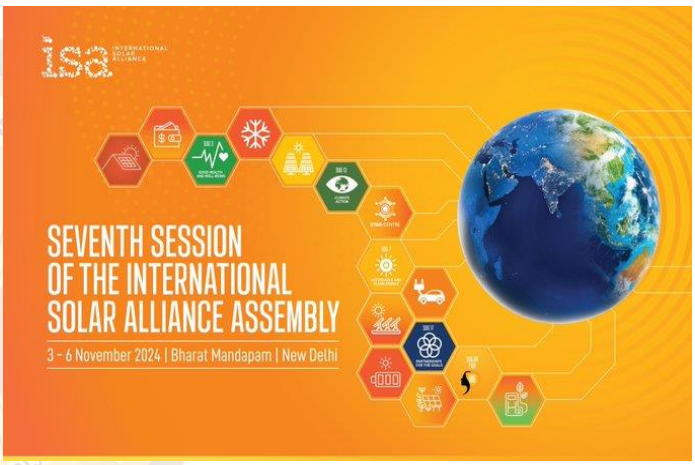

- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) एक वैश्विक पहल है जिसे भारत और फ्रांस ने 2015 में पेरिस में COP21 शिखर सम्मेलन में ऊर्जा पहुँच और जलवायु परिवर्तन के लिए एक स्थायी समाधान के रूप में सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया था।
- भारत में मुख्यालय वाला ISA देश में स्थापित पहला अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जो बहुपक्षवाद और कार्बन-तटस्थ भविष्य के लिए भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। 120 सदस्य और हस्ताक्षरकर्ता देशों के साथ, ISA वैश्विक सौर सहयोग को आगे बढ़ाने, ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाने और स्वच्छ ऊर्जा प्रणालियों में परिवर्तन का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के 7वें सत्र का आयोजन:

- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) का 7वां सत्र, जो 3 से 6 नवंबर, 2024 तक नई दिल्ली में आयोजित किया गया, अपने सदस्य देशों में सौर ऊर्जा की तैनाती में तेजी लाने पर केंद्रित था, विशेष रूप से सीमित ऊर्जा पहुंच वाले क्षेत्रों में।
- इस सत्र के दौरान, वैश्विक सौर ऊर्जा परियोजनाओं में वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ISA ने कई प्रमुख पहल शुरू कीं:
  - ➢ COP27 में शुरू की गई सोलरएक्स स्टार्टअप चुनौती ने ISA सदस्य देशों में अभिनव सौर व्यवसायों का समर्थन किया।
  - ➢ STAR-C पहल ने विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में सौर प्रौद्योगिकी कौशल को मजबूत किया।
  - ➢ वैश्विक सौर सुविधा ने वंचित क्षेत्रों, विशेष रूप से अफ्रीका में निवेश को उत्प्रेरित किया।
  - ➢ व्यवहार्यता अंतर वित्तपोषण योजना ने कम विकसित देशों और छोटे द्वीप विकासशील राज्यों में सौर परियोजनाओं को अनुदान प्रदान किया, जिससे वित्तीय बाधाएं कम हुईं।

➢ सोलर डेटा पोर्टल ने निवेश निर्णयों को सूचित करने के लिए वास्तविक समय डेटा की पेशकश की, और अंतर्राष्ट्रीय सौर महोत्सव ने सौर समाधानों पर वैश्विक सहयोग को बढ़ावा दिया।

➢ ग्रीन हाइड्रोजन इनोवेशन सेंटर ने सौर ऊर्जा और हाइड्रोजन के बीच तालमेल की खोज की।

➢ ISA नॉलेज सीरीज़ और वर्ल्ड सोलर रिपोर्ट्स ने अनुसंधान, अंतर्दृष्टि और बाजार के रुझानों को बढ़ावा दिया, जिससे ISA को दुनिया भर में सौर ऊर्जा के लिए एक अग्रणी अधिवक्ता के रूप में स्थान मिला।

ISA का अवलोकन:

- ISA की उत्पत्ति भारत और फ्रांस के बीच सौर ऊर्जा प्रौद्योगिकियों को व्यापक रूप से अपनाकर जलवायु परिवर्तन से निपटने के साझा दृष्टिकोण से हुई।
- इसका संस्थापक सम्मेलन 11 मार्च, 2018 को भारत में आयोजित किया गया था, जो सौर परिनियोजन की दिशा में अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों को संगठित करने में एक महत्वपूर्ण कदम था। ISA का उद्देश्य सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करना है, विशेष रूप से सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा (SDG 7) और जलवायु कार्रवाई (SDG 13) के क्षेत्रों में।

- शुरुआत में विकासशील देशों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, ISA के फ्रेमवर्क समझौते को 2020 में संशोधित किया गया ताकि सभी संयुक्त राष्ट्र सदस्य राज्यों को इसमें शामिल होने की अनुमति मिल सके, जिससे इसकी पहुंच और व्यापक हो सके और गठबंधन की वैश्विक प्रकृति को मजबूत किया जा सके।

ISA का लक्ष्य:

- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) का लक्ष्य 2030 तक अपनी 'टूवर्ड्स 1000' रणनीति के माध्यम से सौर ऊर्जा में एक ट्रिलियन डॉलर का निवेश प्राप्त करना है, जिसमें प्रौद्योगिकी और वित्तपोषण लागत दोनों को कम करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- इस महत्वाकांक्षी योजना का उद्देश्य एक अरब लोगों को ऊर्जा उपलब्ध कराना और 1,000 गीगावाट सौर ऊर्जा क्षमता स्थापित करना है। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने से वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी आएगी, जिससे सालाना 1,000 मिलियन टन CO2 कम होगा।
- कृषि, स्वास्थ्य, परिवहन और बिजली उत्पादन जैसे क्षेत्रों में सौर ऊर्जा को बढ़ावा देकर, ISA सदस्य देश नीतियां बनाते हैं और बदलाव लाने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करते हैं। गठबंधन ने सौर परियोजनाओं के लिए अभिनव व्यावसायिक

मॉडल विकसित और परीक्षण किए हैं, अपने ईज़ ऑफ़ डूइंग सोलर एनालिटिक्स के माध्यम से सौर-अनुकूल कानून बनाने में सरकारों का समर्थन किया है, और लागत कम करने के लिए सौर प्रौद्योगिकी की मांग को एकत्रित किया है।

ISA की डिलीवरी धीमी रही:

- ISA को कभी भी प्रोजेक्ट डेवलपर नहीं माना गया था। इसे एक सुविधाकर्ता या बल गुणक के रूप में परिकल्पित किया गया था, जो देशों को सौर ऊर्जा का दोहन करने में वित्तीय, तकनीकी, विनियामक या अन्य बाधाओं को दूर करने में मदद करेगा। अंतिम परिणाम सौर ऊर्जा की बड़े पैमाने पर तैनाती होना था, खासकर उन देशों में जहां ऊर्जा की पहुंच बहुत कम थी।
- लेकिन नौ साल बाद भी ISA के पास दिखाने के लिए बहुत ज़्यादा प्रगति नहीं है। ISA द्वारा सुविधा प्राप्त सौर ऊर्जा परियोजना का संचालन अभी तक शुरू नहीं हुआ है।
- पहली ऐसी परियोजना क्यूबा में होने की उम्मीद है, जहां नीलामी हो चुकी है और 60 मेगावाट का प्लांट लगाने के लिए डेवलपर का चयन किया गया है, जिसके बाद लगभग 1,250 मेगावाट की कुल क्षमता वाली कई अन्य समान आकार की या बड़ी परियोजनाएं शुरू होने वाली हैं। कहा जाता है कि अफ्रीका और लैटिन अमेरिका

के कई अन्य देशों ने तैयारी का काम पूरा कर लिया है और वे क्यूबा के उदाहरण का अनुसरण करने के लिए तैयार हैं।

चीन बाकी देशों से आगे:

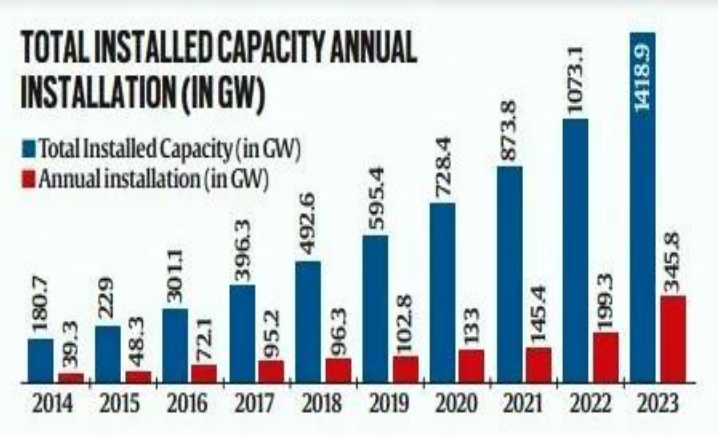

- सौर ऊर्जा के उपयोग में तेजी से हो रही वृद्धि को देखते हुए, ISA द्वारा कई और परियोजनाओं को शुरू करने में असमर्थता चौंकाने वाली है। पिछले पांच वर्षों में सौर ऊर्जा की वैश्विक स्थापित क्षमता सालाना 20 प्रतिशत से अधिक की दर से बढ़ रही है। ISA के प्रकाशन, वर्ल्ड सोलर मार्केट रिपोर्ट 2024 के अनुसार, पिछले साल इसमें 30 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई।

- लेकिन जैसा कि ISA के महानिदेशक अजय माथुर ने बताया, इनमें से अधिकांश स्थापनाएँ मुट्ठी भर देशों में हो रही हैं, जिनमें चीन का हिस्सा सबसे अधिक है। 2023 में 345 गीगावाट की सौर क्षमता वृद्धि में से 216

गीगावाट से अधिक, या लगभग 62 प्रतिशत, अकेले चीन में हुई। सौर ऊर्जा में 80 प्रतिशत से अधिक निवेश विकसित देशों, चीन और भारत जैसे बड़े विकासशील देशों में हो रहा है।

बाधाएं और समाधान:

- छोटे विकासशील देशों में, विशेष रूप से अफ्रीका में, प्रवेश में बड़ी बाधाएं हैं। ISA इसी को दूर करने में लगा हुआ है। इनमें से कई देशों के पास बड़ी बिजली परियोजनाओं को क्रियान्वित करने का पूर्व अनुभव नहीं है, और निश्चित रूप से सौर परियोजनाओं का नहीं, जो कि नई तकनीक है।
- कोई स्थानीय डेवलपर नहीं हैं, इसलिए निवेश विदेशी कंपनियों से आने वाला है। लेकिन विदेशी निवेशक नीति स्थिरता और सुदृढ़ विनियामक वातावरण की तलाश करते हैं। ऐसे में ISA सरकारों और स्थानीय संस्थानों के साथ मिलकर विनियामक संरचनाएं बनाने, बिजली खरीद समझौतों का मसौदा तैयार करने और मानव संसाधनों को प्रशिक्षित करने के लिए काम कर रहा है।
- ISA के महत्वपूर्ण हस्तक्षेपों में से एक स्थानीय संस्थानों के साथ साझेदारी में सौर प्रौद्योगिकी और अनुप्रयोग संसाधन (STAR) केंद्रों की स्थापना करना रहा है। इसके

परिणामस्वरूप स्थानीय विशेषज्ञता और क्षमता निर्माण हुआ है। इन प्रयासों के परिणाम जल्द ही दिखाई देंगे।

ISA में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका:

- उल्लेखनीय है कि सौर ऊर्जा की स्थापना केवल एक साधन है। ISA का गठन भारत के लिए एक बहुत बड़े रणनीतिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए किया गया था। यह वैश्विक दक्षिण, विशेष रूप से अफ्रीका के देशों तक भारत की पहुँच का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
- इस प्रकार ISA भारत के कूटनीतिक उद्देश्यों से जटिल रूप से जुड़ा हुआ है। इस कारण से, ISA का प्रदर्शन वैश्विक दक्षिण के नेतृत्व का दावा करने और उसकी ओर से बोलने की भारत की क्षमताओं को दर्शाता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं इसके उद्देश्य की वकालत करते रहे हैं, और हर प्रासंगिक मंच पर इसकी महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बात कर चुके हैं।
- भारत के महत्वाकांक्षी नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्य, मुख्य रूप से 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा प्राप्त करने का लक्ष्य, दुनिया भर में सौर ऊर्जा को अपनाने के लिए ISA के मिशन के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है।

यह लक्ष्य व्यापक पंचामृत पहल का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य कार्बन उत्सर्जन को कम करना और सतत विकास को बढ़ावा देना है।

भारत के सौर ऊर्जा क्षेत्र का सिंहावलोकन:

- भारत का सौर क्षेत्र तेजी से बढ़ रहा है, सौर ऊर्जा क्षमता के मामले में देश विश्व स्तर पर पांचवें स्थान पर है। सितंबर 2024 तक, भारत की स्थापित सौर क्षमता लगभग 90.76 गीगावाट है, जो पिछले नौ वर्षों में 30 गुना बढ़ गई है। राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थान का अनुमान है कि भारत की सौर क्षमता 748 गीगावाट है।
- पांच पंचामृत लक्ष्यों में शामिल हैं (i) भारत वर्ष 2030 तक अपनी गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता को 500 गीगावाट तक पहुंचाएगा, (ii) भारत वर्ष 2030 तक अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का 50 प्रतिशत नवीकरणीय ऊर्जा से पूरा करेगा, (iii) भारत अब से वर्ष 2030 तक कुल अनुमानित कार्बन उत्सर्जन में एक अरब टन की कमी करेगा, (iv) वर्ष 2030 तक, भारत अपनी अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता को 45 प्रतिशत से कम करेगा, तथा (v) वर्ष 2070 तक भारत नेट जीरो का लक्ष्य प्राप्त करेगा।
- देश ने पिछले 8.5 वर्षों में अपनी स्थापित गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता में 396 प्रतिशत की वृद्धि के साथ उल्लेखनीय प्रगति की है

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- देश की कुल ऊर्जा क्षमता का लगभग 46.3 प्रतिशत अब गैर-जीवाश्म स्रोतों से आता है। यह वृद्धि भारत की सतत ऊर्जा के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है।
- नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं में 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की अनुमति सहित भारत सरकार की सक्रिय नीतियों ने इस क्षेत्र के विकास और निवेशकों के लिए आकर्षण को और बढ़ाया है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

MCQs

1. चर्चा में रहे 'बर्लिन के दिवार के पतन' की घटना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

   1. यह आधुनिक समय में विश्व के एक प्रमुख युगांतकारी घटना मानी जाती है।
   2. बर्लिन के दिवार को गिराने का फैसला, पश्चिमी जर्मनी एवं पूर्वी जर्मनी के एकीकरण के फैसले के उपरांत लिया गया था।

   उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1

   (b) केवल 2

   (c) 1 और 2 दोनों

   (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

   Ans: (a)

2. हाल में चर्चा में रहे 'बर्लिन की दीवार' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) बर्लिन की दीवार एक दीवार नहीं, बल्कि दो दीवारें थीं।

   (b) इसका निर्माण अगस्त 1961 में शुरू किया गया था।

   (c) बर्लिन की दीवार बनने से बहुत पहले ही बर्लिन शहर बंटा हुआ था।

   (d) उपर्युक्त सभी सही हैं।

   Ans:(d)

3. चर्चा में रहे 'अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA)' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. इसकी उत्पत्ति भारत और फ्रांस के बीच सौर ऊर्जा प्रौद्योगिकियों को व्यापक रूप से अपनाकर जलवायु परिवर्तन से निपटने के साझा दृष्टिकोण से हुई।
2. इस का उद्देश्य एक अरब लोगों को ऊर्जा उपलब्ध कराना और 1,000 गीगावाट सौर ऊर्जा क्षमता स्थापित करना है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans:(c)

4. चर्चा में रहे 'बर्लिन के दिवार के पतन' के विश्व इतिहास पर प्रभाव के संदर्भ निम्नलिखित तथ्यों में से कौन-सा सही नहीं है?

(a) बर्लिन की दीवार का गिरना शीत युद्ध की समाप्ति थी।

(b) बर्लिन की दीवार के गिरने से पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के बीच सामाजिक और आर्थिक विभाजन समाप्त हो गया।

(c) बर्लिन की दीवार का गिरना 1991 में सोवियत संघ के पतन के साथ हुआ।

(d) बर्लिन की दीवार के गिरने से नाटो का विस्तार हुआ।

Ans:(b)

5. चर्चा में रहे 'भारत के सौर ऊर्जा क्षेत्र में प्रदर्शन' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थान के अनुमान के अनुसार भारत की सौर क्षमता 1000 गीगावाट है।

2. सितंबर 2024 तक, भारत की स्थापित सौर क्षमता लगभग 90 गीगावाट है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Ans:(b)